International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 193-195

शांति शिक्षा मे आने वाली बाधाएँ

डॉ. राखी गिरीराज धिंग्रा
UGC, Post-Doctoral Fellow, Maharashtra, India

सारांश
शिक्षित व्यक्ति से हमेशा यह आशा कि जाती है कि, उसने समाज के लिए शांतिदूत का कार्य करना चाहिए परंतु वर्तमान परिस्थितियों मे शिक्षित व्यक्ति ही पशु बन बैठा हैअ शिक्षा मे कई ऐसी बाधाएँ है जो व्यक्ति के विचार शक्ति को ही नष्ट कर देती हैअ जिससे शिक्षित, सभ्य व्यक्ति भी घृणित व गैर कानूनी कार्य करने पर मजबूर हो जाता हैअ उदा ः आज काश्मीर मे पढ़ेलिखे काश्मीरी युवकों को जाति व धर्म के नाम पर लोगो को हत्या करना सिखाया जाता है और उनमे धार्मिकजातिवाद के नाम पर हिंसा फैलाने को मजबुर किया जाता हैअ जिससे वहॉ पर शिक्षा का प्रभाव शून्य हो जाता है इसी प्रकार का अन्य बाधाओं का वर्णन प्रस्तुत लेख में विस्ताार से किया जा रहा है जो शांति शिक्षा को प्रभावित करती है।

मूल शब्द ः शांति शिक्षा

प्रस्तावना
शिक्षा द्वारा ही प्रमुख तौर पर शांति को स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति सभ्य व्यवहार तथा अच्छे आचरण की अपेक्षा रखी जाती हैअ शिक्षा मे शांति को स्थापित करने हेतु कई प्रकार की प्रकियाओ से हो कर गुजरना पड़ता हैअ जैसे पाठ्यक्रम मे नैतिक व आदर्श मूल्यों का समावेश, उसी के साथ मानवीय और पर्यावरणीय शिक्षा का भी समावेश इसमे किया जाता हैअ तब जाकर वह शिक्षा शांति शिक्षा का रूप लेने लगती हैअ वर्तमान समय मे शिक्षा का उपयोग शांति स्थापित करने हेतु करना अतिआवश्यक हो गया है कारण आज संपूर्ण समाज व देश को भष्ट्राचार व आंतकवाद जैसे दीमक ने चारो ओर से घेर लिया हैअ जिस कारण प्रत्येक व्यक्ति को कभी ना कभी अपने जीवन मे छल, कपट और हिंसा सामना करना ही पड़ता हैअ इन सब के समाधान हेतु शिक्षा मे शांति को स्थापित किया जाना जरूरी हो गया है परंतु इसके प्रयोग मे कई प्रकार की बाधाएँ ऊत्पन्न हो रही है जो शिक्षा का सही तरह से उपयोग शामित के लिए नही हो पा रहा हैअ आज का मानव परमाणु बनाने के विज्ञान का उपयोग करना तो बखुबी सीख गया है परंतु जीवन मे सुखसमाधान से जीवन यापन करने हेतु मानव शिक्षा का उपयोग शांति स्थापित करने हेतु नही कर पा रहा हअै फलस्वरूप शांति के लिए शिक्षा के मार्ग मे आने वाली प्रमुख बाधाओं का वर्णन निम्नलिखित रूप मे किया जा रहा है

शांति शिक्षा मे आने वाली बाधाएँ दो प्रकार की है
अ. प्रमुख बाधाएँ ह्यांन्ि भररएिरस्ह
ब.सामान्य बाधाएँ ह्यघ्एन्एराल् भररएिरस्ह

अ.शांति शिक्षा मे आने वाली प्रमुख बाधाएँ निम्नलिखित hO (Main Barriers in Peace Education)
१.सम्प्रदाय (Communalism) ः भारत देश मे अनेक धर्म व संम्प्रदाय है और वे भी अनेक उपसम्प्रदाय मे बंटे हुए हैअ ये भिन्नभिन्न वर्ग तथा संम्प्रदाय धार्मिक हिंसा तथा उन्माद का प्रमुख आधार हैअ इनमे आपस मे कभी भी संघर्ष निर्माण होता ही रहता है फलस्वरूप दंगेफसाद, हिंसा, खुनखराबा, अस्थिरता जैसे वातावरण का निर्माण हो जाता हैअ इन सांम्प्रदायिक हिंसा के परिणाम कई वर्षो तक न भूल ना पाने वाले बन जाते हैअ जैसे ः बाबरी मस्जिद, गुजरात दंगे, इत्यादिअ सभी जाति, वर्गो तथा व्यक्तियों के निजी स्वार्थ को त्याग कर ही इस जटिल समस्या का समाधान संभव हैअ

२.जातिवाद (Recism) ः जातिवाद का संक्षिप्त अर्थ है वंश एवं जाति के आधार पर व्यक्ति कार्य एवं व्यवहार की श्रेष्ठता एवं विवेकशीलता का आंकलन तथा उसके भविष्य के व्यवसाय एवं कार्य क्षेत्र का निर्णय लेनाअ जातिवाद का संबंध उन विशेषताओ के आधार पर होता है जो किसी व्यक्ति के कुटुंब, परिवार, वंश एंव जाति के आधार पर आंकी जाती हैअ शिक्षा द्वारा शांति शिक्षा के लिये जाने वाले प्रयासों को जातिवाद द्वारा अप्रभावी कर दिया जाता हैअ

३.भाषावाद (Langualism) ः भारत बहु भाषा तथा बोलियों वाला देश हैअ भाषा यह व्यक्ति का मौलिक अधिकार है तथा इसकी अभिव्यक्ति के प्रति भी संवेदनशीलता होता है इसलिए संविधान ने इसे सुरक्षा प्रदान की हैअ भाषावाद का स्वरूप सकारात्मक हो तथा भारतीय समाज इसमे अपेक्षित सहयोग करे तो इससे राष्ट्रीय विकास मे अधिक बढ़ोत्तरी होना संभव हैअ

४.आंतकवाद (Terrorism) ः आंतकवाद की समस्या अति प्राचीनकाल से चली आ रही हैअ पहले असुर अपनी मायावी शक्तियो का इस्तेमाल कर आंतक फैलाकर जनता को आंतकित कर अपना स्वार्थ सिध्द् करते थेअ उसी प्रकार वर्त मान समय मे यही कार्य मानव ने कईप्रकार की निराशा व समस्याओ से ग्रस्त होकर प्रारंभ कर दिया हैअमानव ने अपने मन मे यह गलत बात बिठा ली है कि वह डरा धमकाकर, आंतक एवं बंदूक की नोक पर अपनी इच्छाओ को प्राप्त कर सकता हैअ जिससे सामान्य मनुष्य का जीना मुश्किल हो गया हैअ समाज मे शिक्षा का प्रचार व प्रसार व्यापक रूप से करने से व्यक्ति सही व गलत का फैसला स्वयं कर सकेगाअ जिसके लिए शिक्षा द्वारा आर्दशवादी मूल्यों, सार्व जनिक हित, नैतिकता एवं मानवता पर आधारित शांति शिक्षा द्वारा दी जानी चाहिएअ

५.धार्मिक संर्कीणता (Religious narrowness) ः विद्यालय मे पढ़ने वाले बालक कई धर्म व संप्रदायों के होते हैअ जिससे उनके आचरण व व्यवहार मे अंतर होता हैअ शिक्षा द्वारा एक सुत्र मे इसे बांधने मे धार्मिक संर्कीणता आड़े आ जाती हैअ अनेक बार धर्म का गलत तरीको से परिभाषित किया जाता हैअ

जिससे हिंसा उत्पन्न हो जाती हैअ पाकिस्तान मे गलत तरीको से समझाकर ही युवकों को आंतकवादी बनाया जाता हैअ इस प्रकार धार्मिक संर्कीणता शिक्षा के मार्ग मे बाधा बन समाज मे शांति स्थापित नही होने देती हैअ

ब.शांति शिक्षा मे आने वाली सामान्य बाधाएॅ निम्नलिखित है ह्यघ्एन्एराल भररएिरस नि प्एाच्ए श्र्दुचर्तोन्हि ः

१.स्वार्थवादिता (Selfishness) ः बालक विभिन्न प्रकार के परिवार व वातावरण से होते हैअ जिसका असर उनके व्यवहारो मे भी होता हैअ उसी के साथ ही मानव स्वभाव मे स्वार्थ छुपा हुआ ही होता है जिससे कई प्रकार के संघर्षो का निर्माण समाज मे होने लगता हैअविद्यार्थी जीवन मे शिक्षकों की स्वार्थ वादिता भी शिक्षा के मार्ग मे बाधा हैअ इससे शांति व्यवस्था की स्थापना समाज मे कुप्रभावित होती हैअ

२.अंधविश्वास (Blind Faith) ः समाज मे अनेक प्रकार की कुप्रथायें और अंधविश्वास पर आधारित परंम्परा चली आ रही हैअ जिस कारण समाज मे शांति स्थापित करने मे शिक्षा असमर्थ रही हैअ जैसे बलि प्रथा जिसमे जानवरो की बलि दी जाती है इसमे शिक्षित व्यक्ति भी संलग्न पाया जाता हैअ इस प्रकार के अनेक अंधविश्वासो को शिक्षा आज तक समाप्त नही कर पायी हैअ

३.आदर्श मूल्यों का अभाव (Lack of Idealistic Values) ः समाज मे आदर्श मूल्यों का अभाव पाया गया हैअ आज प्रत्येक मातापिता अपने बच्चों को अच्छे व्यवहार के बदले धन कमाने तथा अनैतिक आचरण करने के लिए कहते हैअ सिध्दांत व आदर्श से किसी का भला नही होता ऐसा कह कर उन्हे बड़ा किया जाता है जिस कारण वह अपने गुरू व बड़ो का मान सम्मान करना पसंद नही करतेअ उन्हें तो छल कपट की दुनिया ही पसंद होती हैअ इससे उनका व्यवहार आदर्श मूल्यों से रहित हो जाता है और इसी कारण समाज मे अशांति का निर्माण होने लगता हैअ

४.नैतिक शिक्षा का अभाव (Lack of Moral Values) ः वर्तमान मे कई छात्रों मे नैतिक शिक्षा का महत्व ही नही रह गया हैअ समाज मे इनका पालन करने वालो को उचित सम्मान नही दिया जाता हैअ उनका मजाक उड़ाया जाता है शिक्षक भी नैतिकता भरा आचरण नही करते है जिससे समाज मे अशांति का निर्माण होने लगता हैअ

५.शिक्षा के समन्वित रूप का अभाव (Lack of Co-ordinate from of Education) ः शिक्षा का उद्वेश्य संपूर्ण राष्ट्र एवं विश्व मे शांति स्थापित करना हैअ प्रत्येक राज्य अपने अनुसाार प्राथमिक शिक्षा को संचालित करता हैअ जिससे शांति शिक्षा के लिये समग्र रूपरेखा तैयार ही नही हो पाती है तथा समाज मे अशांति की स्थिति होती हैअ

६. शिक्षा की सार्वभौमिल्ता का अभाव (Lack of Universalisation of Education) ः वर्तमान शिक्षा यह सार्वभौमिक होनी आवश्यक हैअ जिससे एक शिक्षित समाज का निर्माण होना जरूरी हैअ अशिक्षित व्यक्ति समाज मे कई प्रकार की अशांति को उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार हैअ इसीलिए शिक्षा को सार्वभौमिक करना जरूरी हो गया है।

७.शिक्षा को व्यवसाय से जोड़ना (Connect to Education with Vocation) ः शिक्षा का संबंध ज्ञान से होना चाहिए परंतु वर्तमान मे व्यवसाय व धन कमाने के लिए शिक्षा प्राप्त की जा रही हैअ व्यक्ति ज्ञानी नही होगा तो वह अमीर बनकर समाज मे अशांति का ही निर्माण करेगाअ आज व्यवसाय के योग्य बनना व धन कमाना ही शिक्षा का मूल उद्वेश्य समझा जा रहा है जिस कारण शांति शिक्षा पूर्ण रूप से अप्रभावी हो रही है

शांति शिक्षा के लिये आने वाली बाधाओ के उन्मूलन के उपाय (Measures to Abolition of Barriers in Education for Peace Education) ः शांति शिक्षा के मार्ग मे आने वाली बाधाओं को विभिन्न उपायो द्वारा दूर किया जा सकता हैअ जिससे शिक्षा मे शांति शिक्षा को स्थापित करने मे आसानी हो सकें ।

निम्नलिखित उपायों द्वारा इसे सक्षम बनाया जा सकता है ः

१. संम्प्रदायवाद को समाप्त कर मानव को मानवता एवं बढ़ावा देना चाहिएअ
२. जातिवाद को खत्म कर उसे अनेक भागों मे बटने से रोकाा जाना चाहिएअ
३. भाषावाद को समाप्त कर एक राष्ट्रभाषा पर जोर देना चाहिएअ
४. आंतकवाद को समाप्त करने हेतु धर्म के मूलतत्व मानवता और नैतिकता को सही अर्थो मे समझाना चाहिएअ
५. धार्मिक संकीर्णता को समाप्त करने हेतु अहिंसात्मक गतिविधियों को मुख्य स्थान देकर हिंसा को खत्म करना चाहिएअ
६. समाज मे अंधविश्वास एवं रूढिवादिता को स्थान ही नही दिया जाना चाहिएअ
७. नैतिक कार्यो मे बालको को अधिक से अधिक सम्मिलित करना चाहिएअ
८. समाज जिन मूल्यों व आदर्शो को खोखला कर शांति भंग कर रहा है उसे शिक्षा द्वारा स्थापित करना चाहिएअ
९. शिक्षा का समाज मे विस्तार करना चाहिए कारण विखंड़न से समाज मे अशांति उत्पन्न होती है और एकता और सहयोग से शांतिअ
१०. शिक्षा को ज्ञान से जोड़ना चाहिए जिससे मानसिक एवं सामाजिक शांति उत्पन्न हो सकेंअ

निष्कर्ष

प्रस्तुत लेख के निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि, शांति शिक्षा को शिक्षा मे द्वारा स्थापित करने मे जितनी भी बाधाएँ है उनको सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक सहयोग तथा शिक्षा के व्यवस्थित कियान्वयन के माध्यम से दुर किया जा सकता हैअ इस हेतु शिक्षा को सारगर्भित नैतिक मूल्यों व आदर्शो के अनुरूप बनाना अतिआवश्यक हो गया है तभी देश व समाज मे शांति को सही मायने मे स्थापित किया जा सकेगाअ

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Agarwal JC. Development and Planning of Modern Education, 1990.
2. Bartlett. Teaching Teachers to Teach Peace: A Reflective Pre-Service case study, 2014.
3. Bernard, Richard. My ultimate Conflict and Peacemaking Resolution, 2008.
4. Charles, Selvi. Peace and Value Education. Hyderabad: Neelkamal Publication, 2012.
5. Loknath Mishra. Peace Education Framework for Teachers. New Delhi: A.P.H.Publishing Corporation, 2009.
6. अनेजा, (1986), शान्तिपर्व में नैतिक मूल्य। दिल्लीःकादम्बरी प्रकाशन।
7. बालिया, (2011), ''सरकारी एवं निजी विदयालयों के शिक्षकां में शांति शिक्षा के प्रति अभिवृत्ती का अध्ययन''
8. भोसले, डोणे (2009), शिक्षणातील बदलते विचार प्रवाह. कोल्हापुरः फडके प्रकाशन.
9. चौधरी, (2014), '' माध्यमिक शाळेतील शिक्षकांची शांतता शिक्षण विषयक जाणीव'

10. जगताप (2006, 2008), शिक्षणातील नवप्रवाह व नवप्रवर्तने पुणेःनित्य नुतन प्रकाशन.
11. लोकमान्य तिलक टिचर ट्रेनिंग कॉलेज (2010)। अंतर्राष्ट्रीय सभा। उदयपुर : राजस्थान।
12. मोहरकर (2007), ''शांतता शिक्षणात माध्यमिक शाळांची भुमिका''
13. पांडुरंग (2014) ''माध्यमिक शाळेतील शिक्षकांमध्ये शांतता शिक्षणाविषयक जाणीव जागृतीचा अभ्यास''
14. शिखरे डिसले, (2014).'' माध्यमिक स्तरावरील शिक्षकांचा शांततेसाठी शिक्षणविषय दृष्टिकोन.
15. सारडा, (2011), ''शिक्षकों में शांति शिक्षा हेतु जागरुकता एक अध्ययन''